जल अधिकार जीवन आधार

अप्रैल से जून, 2020 अंक 2

परम अर्थ तक पहुचने की कवायद ‘‘ परमारथ के कारणे साधुन धरा शरीर’’
परमार्थ समाज सेवी संस्थान के द्वारा कोरोना काल में किये गये प्रयास

कोरोना पीड़ितों की पीर पोछने का जज्बा

कोरोना महामारी के कारण हुये लॉकडाउन में पूरे विश्व की अर्थव्यवस्था को प्रभावित किया है। लाखों की तादाद में लोगों के रोजगार छिन गये, आर्थिक संकट से बहुत बडा वर्ग जूझ रहा है। एक तरफ अपने को बीमारी से बचाना। दूसरे तरफ आर्थिक चुनौतियों का सामना करकर आगे बढना, इस दौर की सबसे बडी चुनौती है। लाखों की तादात में जो प्रवासीय मजदूर लॉकडाउन के दौरान महानगरों से अपने गांव की तरफ आये थे, उन्होंने अपने गांव में आजीविका के संसाधनों से जुडने के लिए भरकस प्रयास किये, लेकिन उनकी जरूरत के हिसाब से रोजगार उपलब्ध नहीं हो पाये। सरकारी प्रयास भी खूब किये गये किंतु आवश्यकता एवं उपलब्धता के बीच का अंतर इतना अधिक है कि उसे पाट पाना बहुत मुश्किल है।

कोरोना ने समाज के सभी वर्गो को प्रभावित किया है, क्या गरीब, क्या अमीर सभी इससे प्रभावित है। कोरोना काल में सामाजिक संगठनों ने जो सेवा का कार्य किया है, वह इस आपदा से प्रभावित लोगों के तत्कालिक संकट को दूर करने में बहुत कारगर साबित हुये है। जिस तरह से व्यक्तिगत एवं सामुदायिक स्तर पर प्रयास हुये है, उससे जरूरतमंदों को मदद मिली है। लाखों की तादात में ऐसे संगठन भारत के विभिन्न क्षेत्रों में सेवा का अनुकरणीय प्रयास किया है। इसी दिशा में परमार्थ समाज सेवी संस्थान ने उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश के एक दर्जन से अधिक स्थानों पर तत्कालिक और दीर्घकालिक सहायता जरूरतमंद को पहुंचाने का अनवरत प्रयास जारी रखा है। इस प्रयास में रोज खाने कमाने वाले लोगों से लेकर धात्री, गर्भवती महिलाऐं, किसान, मजदूर, पटटी दुकानदारों की सेवा का व्रत निभाया है।

हमें नही मालूम की हम जरूरतमंदों का कितना कष्ट कम कर पाये लेकिन हमने 10 हजार से अधिक परिवारों को राहत सामग्री 22 हजार से अधिक प्रवाासीय मजदूरों को भोजन पहुचानें का कार्य किया है, वह मन को संतोष प्रदान करता है। अब संस्था द्वारा दीर्घकालिक प्रयासों को निरन्तर जारी रखा जा रहा है। यह आपदा इतनी बडी है कि अकेले ना कोई सरकार ना ही कोई सामाजिक संगठन लोगों की जरूरतों को पूरा कर सकता है, इसके लिए समाज के प्रत्येक वर्ग को अपनी भूमिका निभाने की आवश्यकता है। कोरोना काल कितने समय तक चलेगा इसको लेकर अनिश्चितता है अभी भी भारत में कोरोना की वैक्सीन बनने को लेकर समय स्पष्ट नहीं है। जैसे-जैसे कोरोना काल बढ रहा है वैसे-वैसे इसके प्रभाव बढते जा रहे है। आर्थिक चुनौतियां निरन्तर बढती जा रही है। जिसके कारण तत्कालिक और दीर्घकालिक दोनों तरह के हस्ताक्षेप निरन्तर जारी होगे। इसके लिए परमार्थ ने दीर्घकालिक योजना का निर्माण किया है।

हम आभारी है ऐसे दानदाता संगठनों (हिन्दुस्तान यूनिलीवर, वेल्टहंगरहिल्फे, हीलिंग लाइव, सेव इण्डियन फार्मर) जैसे संगठनों के जिन्होंने हमें आर्थिक सहयोग जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए मुहैया कराया।

हम धन्यवाद देना चाहेगे अपने परमार्थ परिवार के सदस्यों को जिन्होंने दिन-रात बिना कोरोना के भय के मेहनत करके सेवा के व्रत को साकार बनाया। हमारा पूरा प्रयास होगा कि हम अपनी सामर्थ के अनुसार जरूरतमंद लोगों की मदद के लिए निरंतर उनके साथ खडे रहेंगे। इसे पूरा करने में आप सब के सहयोग एवं मार्गदर्शन की महती आवश्यकता होगी।

-संजय सिंह

परम अर्थ तक पहुचने की कवायद ''परमारथ के कारणे साधुन धरा शरीर''
परमार्थ समाज सेवी संस्थान के द्वारा कोरोना काल में किये गये प्रयास

को रोना महामारी ने भारत सहित पूरे विश्व को अपने प्रकोप में जकड लिया है, दुनिया का ऐसा कोई देश नहीं है, जिसमें कोरोना संक्रमण ना फैला हो। जिस तरह से इस वायरस का संक्रमण पूरी दुनिया में फैला है, उससे यही लगता है कि यह दूसरे विश्व युद्ध के बाद मानव सभ्यता पर ज्ञात इतिहास की सबसे बडी त्रासदी है। जिससे दुनिया के सभी देश प्रभावित हो रहे है। इस महामारी का प्रभाव आने वाले समय में भी भारत सहित विश्व की अर्थव्यवस्था पर देखने को मिलेगा। आजीविका के संसाधनों में कमी होने के कारण सर्वाधिक असर रोजगार पर पडा है। जिससे लोगों की आर्थिक विपन्नता और अधिक बढ गयी है। भूखमरी बडी है। देश की अर्थव्यवस्था खराब होने के कारण लोगों की आमदनी पर प्रभाव पडा है। जिसका असर करोडो भारतीयों के जीवन स्तर पर भी देखने को मिल रहा है। बहुसंख्य वर्ग का सामाजिक एवं आर्थिक विकास भी बाधित हो रहा है। जिसका पूर्वानुमान पहले ही कई एजेंसियो के द्वारा किया गया है।

कोरोना महामारी के कारण भारत में पच्चीस मार्च से सम्पूर्ण लॉकडाउन लागू कर दिया गया। अचानक लॉकडाउन लागू होने के कारण देश के सभी कामकाज यकायक बंद हो गए, इससे विभिन्न क्षेत्रों से महानगरों में अपनी आजीविका चलाने आये प्रवासीय मजदूरों के सामने रोजगार के अवसरों की समस्या उत्पन्न हो गयी। लॉकडाउन बाद ही हजारों की तादाद में प्रवासीय मजदूर महानगरों से अपने घर की तरफ पैदल ही निकल पडे। अचानक हुए लॉकडाउन के कारण छोटे एवं बडे शहरों में छोटे, पटटी दुकानदार, जो हर रोज कमाकर अपने परिवार का भरण पोषण करते थे उन लोगों के सामने आजीविका का संकट उत्पन्न हुआ, जिसके कारण बडी तादाद में निराशा का माहौल बना रहा। जिसका असर अभी भी दिखायी दे रहा है।

बुन्देलखण्ड में कोरोना का असर

भारत में पहली बार देशव्यापी लॉकडाउन के कारण सबकुछ थम सा गया, बस प्रवासीय मजदूर ही इस लॉकडाउन के दौरान शहर छोडकर गांव की तरफ पैदल निकले। देश में सबसे ज्यादा पलायन वाले क्षेत्रों में पहचाने जाने वाले बुन्देखण्ड में इस लॉकडाउन के कारण सबसे ज्यादा स्थिति खराब रही। इस दौरान इस क्षेत्र के लाखों मजदूरो के आजीविका के संसाधन खत्म हुए, जो शहरो में अपनी आजीविका चला रहे थे उनके लिए लॉकडाउन लागू होने के कारण खाद्यान्न समस्या का सामना करना पडा, खाद्यान्न एवं जरूरी आवश्यकताओं के अभाव के कारण लाखों लोग पैदल ही कई दिनों तक हजारों किलोमीटर का सफर तय कर अपने घर की ओर निकल पडे।

वैसे भी यह इलाका पिछले दो दशको से लगातार सूखे के प्रभाव से गुजर रहा है। 20 साल में 13 बार इस इलाके में सूखे का प्रभाव रहा है। प्रतिकूल मौसम के दौर से गुजरने के कारण यह इलाका प्रति दशको प्राकृतिक आपदाओं का शिकार होता है। कभी खरीफ की फसल खराब हो जाती है तो कभी रबी की फसल। जिससे यह इलाका प्रायः संकटग्रस्त रहता है। पिछले दो दशको में प्राकृतिक आपदाओं एवं घटते आजीविका के संसाधनों के कारण इस इलाके में पलायन एक स्थायी समस्या बन गयी है।

भारत में 14 करोड के लगभग प्रवासी मजदूर है, विशेष तौर से बात करे अगर बुन्देलखण्ड की तो यहां आजीविका के पर्याप्त संसाधन उपलब्ध ना होने के कारण यह देश के सबसे ज्यादा लोगों के पलायन करने वाला क्षेत्र है, यहां से 50 से 70 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के परिवार से हर वर्ष कोई एक सदस्य अपनी आजीविका को चलाने के लिए महानगरों की ओर पलायन करता है एवं 30 से 50 प्रतिशत ग्रामीण क्षेत्र के परिवार जो किसी एक अवधि के दौरान महानगरों में कारखानों, फैक्ट्रियों में काम कर या मजदूरी के लिए अपने गांवों से शहरों की ओर पलायन करते है एवं अपनी आजीविका चलाते है।

वर्ष 2019 में उत्तर प्रदेश के अर्थ एवं संख्या प्रभाग के द्वारा जारी किये गये आंकडे में भी यह निकलकर आया था कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र के 7 जिलो से 22 लाख लोगों ने अपनी आजीविका को सुनिश्चित करने के लिए महानगरों की ओर पलायन किया था, जो बुन्देलखण्ड की आबादी का 20 फीसदी है। एक समाचार एंजेसी के आंकडों के मुताबिक अभी तक देश में सबसे ज्यादा मजदूर बुन्देलखण्ड क्षेत्र में आये है। अभी तक इस क्षेत्र में करीब 9 लाख से ज्यादा प्रवासीय मजदूरो ने घर वापिसी की है।

परमार्थ द्वारा लॉकडाउन के दौरान विभिन्न माध्यमों से लोगों को सहायता देने के लिए दृढ संकल्पित होकर कार्य किया है एवं यह कार्य लगातार जारी है। जिसको लेकर हम लगातार प्रयासरत है।

जरूरतमंदों का सहारा बनी परमार्थ राशन किट

संस्थान के द्वारा लॉकडाउन के दौरान 14 जिलों में सबसे जरूरतमंद ऐसे लोगों को राशन किट का वितरण किया गया, जिनके पास खाद्यान्न का संकट था। ना ही पैसा था कि वह खाद्यान्न को खरीदकर अपनी रोजीरोटी चला सके। कई परिवार ऐसे थे जो शहर में अपनी आजीविका चलाने के लिए आये थे लेकिन अचानक लॉकडाउन के कारण उनका काम बंद हो गया और पैसे ना होने के कारण वह शहर में रह गये। इस दौरान उनकी आर्थिक स्थिति ऐसी थी कि वह अपने खाने की जरूरतों को भी पूरा नहीं कर सकते थे।

झांसी शहर की श्रमिक बस्तियों में लंच पैकेट वितरण के समय यह देखने को मिला कई ऐसे परिवार है जो हर रोज कमाकर अपने भोजन का इंतजाम करते थे। कोरोना के कारण ऐसे परिवारों की आजीविका खत्म हो जाने से यह परिवार हर दिन भोजन के लिए किसी सामाजिक संस्था या प्रशासन के द्वारा चलायी जा रही कम्यूनिटी किचन पर आश्रित थे। जिससे इन्हें सही समय पर खाना उपलब्ध नही हो पा रहा था। संस्थान के द्वारा इन परिवारों की मदद के लिए परमार्थ संस्था के सभी क्षेत्रों में लोगों को राशन किट उपलब्ध कराने की पहल प्रारम्भ की। जिस दौरान 14 जिलों के 9335 परिवारों तक इस किट में 25 किलो आटा, 10 किलो चावल, 5 किलो दाल, 1 लीटर सरसो का तेल, 1 किलो नमक, 250 ग्राम हल्दी, 250 ग्राम ध ानिया, 250 मिर्च, मसाले एवं साबुन प्रति परिवार सामग्री उपलब्ध कराई गई। इस परमार्थ राहत किट को इस प्रकार तैयार किया गया था कि यदि 5 सदस्यीय परिवार रहा तब भी उसके 15 दिन की खाद्यान्न की आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती थी। परमार्थ राशन किट से इन परिवारों के लगभग 40281 सदस्यों को 15 दिन भरपेट दोनो समय खाना उपलब्ध हो पाया। यह प्रयास निरतंर अभी तक जारी है।

परमार्थ द्वारा जिलेवार की गयी किट वितरण सूची

क्रमांक	जिले का नाम	लाभार्थी परिवारों की संख्या	लाभार्थी परिवार सदस्यों की संख्या
1	झांसी	753	3110
2	ललितपुर	670	3225
3	टीकमगढ	313	1120
4	छतरपुर	425	1600
5	खजुराहों	65	200
6	दतिया	65	185
7	बांदा	165	500
8	एटा	875	3717
9	छिंदवाडा	1025	4785
10	लखनऊ	1026	4100
11	कानपुर	700	2833
12	जालौन	1860	8050
13	हमीरपुर	1328	6651
14	निवाडी	65	205
	कुल	9335	40281

इन परिवारों को खाद्यान्न सामग्री पहुचाने के लिए सर्वे किया गया, इस सर्वे में जिलों के ऐसे गांवों एवं बस्तियों को चयनित किया गया जहां पर बहुत अधिक प्रवासीय मजदूर शहरों से आये थे या परिवार मलिन बस्तियों मे रह रहे थे। मुख्यतः राशन किट वितरण में निम्न पैमानों के आधार पर लाभार्थियों का चयन किया गया।

लाभार्थी गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन कर रहा हो

लाभार्थी का परिवार दिहाडी मजदूरी करता हो, लॉकडाउन के दौरान कही से भी उसके परिवार की आजीविका चलाने के संसाधन उपलब्ध ना हो

लाभार्थी जहां पर निवास कर रहा हो वहां के तीन निवासियों के द्वारा यह सुनिश्चित किया गया हो कि लाभार्थी को खाद्यान्न सामग्री की आवश्यकता है।

झांसी के जोहर नगर में परमार्थ किट के वितरण के दौरान झांसी के जिलाधिकारी आंद्रा वामसी के द्वारा लोगों को किट वितरित की गयी। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान के द्वारा शुरू की गई पहल की सराहना करते हुए कहा कि इस संकट की घडी में राज, समाज एवं शासन को मिलकर कार्य करना होगा तभी हम इस चुनौती से पार पा सकते है।

झांसी के मुख्य विकास अधिकारी निखिल फुण्डे ने कहा कि इस संकट के दौर में जिले की सामाजिक संस्थाओं ने प्रशासन का जो सहयोग किया है, उसके लिए हम सब आभार व्यक्त करते है। कोरोना जैसी गम्भीर महामारी का एकमात्र बचाव का तरीका सोशल डिस्टेंसिग है। हम जहां भी लोगों की मदद करने जाये उन्हें सोशल डिस्टेंसिग एवं स्वास्थ्य मंत्रालय के द्व ारा समय–समय पर दिये जा रहे दिशा–निर्देशों को बताये।

परमार्थ संस्थान के प्रमुख संजय सिंह ने कहा कि पूरी दुनिया सहित भारत कोरोना जैसी बडी महामारी के प्रकोप से गुजर रहा है। सम्पूर्ण बंदी के कारण लोगों की आजीविका प्रभावित है आने वाले 15 दिन लोगों के लिए अत्यधिक संकट के है। जरूरतमंद लोगों की मदद सबसे बडी मानवता हैं। इस महामारी से निपटने के लिए हम लोगों को सरकार के द्वारा जारी की गई एडवायजरी का पालन करना चाहिए एवं यह भी सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई भी परिवार भूखे पेट ना सोये।

संस्थान के द्वारा विभिन्न जिलों में गांवों एवं शहर की बस्तियों को चिन्हित कर परिवारों के तत्कालिक एवं दीर्घकालिक मदद की जा रही है।

इस दौरान संस्था के द्वारा झांसी शहर एवं आस–पास के गांव में सर्वेक्षण कर जरूरतमंद परिवारों के डेटा का संकलन किया गया एवं प्रशासन को तत्कालिक स्तर पर जरूरतमंद परिवारों को राहत सामग्री वितरित करवाने एवं राशन कार्ड बनवाने का प्रयास किया गया। इन प्रयासों के फलस्वरूप झांसी मण्डल के मण्डलायुक्त सुभाष चन्द्र शर्मा जी के द्वारा झांसी शहर के पास पलीदा गांव जहां घुमन्तु परिवारों की एक बस्ती निवास करती है, वहां भोजन वितरण किया एवं स्थानीय अधिकारियों को जल्द से जल्द राशन उपलब्ध कराने के उचित कार्यवाही करने के निर्देश दिये। उन्होंने परिवारों को भरोसा दिलाया कि किसी को भी भूखे पेट नहीं सोने दिया जायेगा। झांसी में परमार्थ एवं अन्य सामाजिक संस्थाऐं लगातार लोगों की मदद कर रही है।

गांव लौटे प्रवासीय मजदूर श्रमदानियों ने जल संरचनाओं का किया पुनरूद्धार

लॉकडाउन के बाद जिस तरह से बडे पैमाने पर महानगरों से रिवर्स माईग्रेशन गांव की तरफ हुआ है। ऐसे में गांव में मजदूरों को बडे पैमाने पर रोजगार की दरकार हुयी। ऐसे में उनके सामने रोजगार हेतु एक मात्र मनरेगा ही विकल्प था। शहरों से जब हजारों किलोमीटर की यात्रा कर मजदूर अपने गांव वापस आये तो उन्हें क्वारनटांइन में भी रहना पडा। तब तक अधिकांश गांवो में रबी की फसल की कटाई हो चुकी थी। ऐसे में मजदूरों के सामने गांव में रोजगार के कोई साधन नहीं थे। सरकार के द्वारा लगातार रूप से लोगों को मनरेगा से कार्य दिलाया जा रहा था, लेकिन ऐसे में भी कई परिवार ऐसे थे जिन्हें समय पर काम नहीं मिल पा रहा था, काम मिला भी तो उसका भुगतान होने में बहुत ज्यादा समय लग रहा था। जिसके कारण मजदूरों में निराशा थी। कई मुसीबतों का सामना करके मजदूर गांव पहुचे थे, कई दिनों से कोई काम ना करने के कारण जो भी पैसा था वह भी खर्च हो गया। जिससे आर्थिक तंगी होने के कारण गांव में ही आजीविका के संसाधन तलाश रहे है जिसके लिए उनके सामने कृषि एक बडी सम्भावना है। बुन्देलखण्ड में खेती ठीक से हो उसके लिए सिंचाई की सुविधा (जल की उपलब्धता) अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

जल संकट के निवारण के लिए बुन्देलखण्ड के टीकमगढ, छतरपुर, झांसी, ललितपुर में वापस आये प्रवासीय मजदूरों ने कई गांव में श्रमदान शिविरो का आयोजन करके अदभुत उदाहरण प्रस्तुत किया। शहरो से गांव आये प्रवासीय मजदूर अपने गांव के तालाबों की पाड सम्हाली। ताल–पाल–झाल को ठीक कर रहे है। श्रमदान का यह प्रयास पानी पंचायत और जल सहेलियों के सहयोग से सम्भव हो पाया।

भारत में सदियों से ही फूड फॉर वर्क (भोजन के बदले काम की परम्परा) रही है। इस अवधारणा पर हजारों तालाब, नहर बनाये गये। बुन्देलखण्ड जैसे इलाके में आज भी कई तालाब, जल संरचनाऐं (कैदशाली) नाम से जानी जाती है, कि इस वर्ष अकाल हुआ था उस वर्ष अकाल में भोजन देने के लिए संरचना अमुख राजाओं ने बनवायी थी। कोरोना महामारी के कारण वैसी ही स्थिति पुनः बुन्देलखण्ड जैसे इलाके में दिख रही है। जहां पर बडी तादात में प्रवासीय मजदूर वापस आये है। इसी सोच को साकार करते हुए परमार्थ समाज सेवी संस्थान के द्वारा श्रमदान शिविरों का आयोजन किया गया है, जिनके परिणाम सार्थक दिखायी दे रहे है। एक तरफ जरूरतमंद लोगों को खाद्यान्न सामग्री उपलब्ध करायी गयी वही दूसरी तरफ बुन्देलखण्ड में पानी को सहेजने के लिए नदियों, तालाबों एवं अन्य संरचनाओं को पुर्नजीवित किया गया।

संस्थान द्वारा जीर्णोद्धार की गयी जल संरचनाओ का विवरण

क्रमांक	जिला का नाम	गांव का नाम	जल संरचना का विवरण
01	टीकमगढ	बुदौरा	झिन्नन तलैया का गहरीकरण
02	टीकमगढ	तमोरा	चंदेलकालीन तालाब का गहरीकरण
03	टीकमगढ	सूरजपुर	खेरा के तालाब का गहरीकरण
04	टीकमगढ	जगतनगर	पठा तालाब का गहरीकरण
05	टीकमगढ	मस्तापुर	फुटेरा तालाब का गहरीकरण
06	टीकमगढ	कोडिया	चंदेलकालीन तालाब का निर्माण
07	छतरपुर	भौयरा	बेटी बांध तालाब का गहरीकरण
08	छतरपुर	बरेठी	नार सिंह बादल तलैया का गहरीकरण
09	छतरपुर	कुवंरपुरा	इरौरिया की तलैया का गहरीकरण
10	छतरपुर	चौधरीखेरा	छोटी तलैया का गहरीकरण
11	छतरपुर	बहादुरपुर	सिमरिया बाबा की तलैया का गहरीकरण
12	छतरपुर	बंधा	छोटी तलैया का गहरीकरण
13	छतरपुर	सेवार	गुलाटीबंधा का बंध निर्माण
14	छतरपुर	राजनगर	ढुकमपुर की तलैया का गहरीकरण
15	छतरपुर	अगरौठा	अगरौठा तालाब का गहरीकरण

16	झांसी	मानपुर	नहर की सफाई
17	झांसी	सिमरिया	टेकमपुर की तलैया का गहरीकरण
18	झांसी	सरवां	पुराने तालाब का गहरीकरण
19	झांसी	खाडी	चैकडेम की सिल्ट सफाई
20	झांसी	मानपुर	मानपुर तालाब का गहरीकरण
21	ललितपुर	गेबरा	बुंदेली तालाब का गहरीकरण
22	ललितपुर	गुन्देरा	कोटी तलैया का गहरीकरण
23	ललितपुर	बिजरौठा	पुराने तालाब का गहरीकरण
24	ललितपुर	राधापुर	तालाब का गहरीकरण
25	ललितपुर	झाबर	पानी की टंकी के पास की तलैया का गहरीकरण
26	बांदा	भंवरपुर	घरार नदी की सफाई
27	बांदा	कथेलापुरवा	तलैया का गहरीकरण
28	टीकमगढ	बनगायं	बुद्धसागर तालाब का गहरीकरण
29	छतरपुर	ढडोरा	ढडोरा तालाब का गहरीकरण
30	झांसी	खजुराहाखुर्द	तालाब का गहरीकरण
31	ललितपुर	विजयपुरा	जेरूआ तालाब का गहरीकरण

प्रवासीय मजदूरों के लिए परमार्थ रसोई

कोरोना महामारी से लॉकडाउन लागू होने के कारण महानगरों में रह रहे लाखों प्रवासीय मजदूरों की आजीविका के संसाधन यकायक बंद हो जाने के कारण, यह मजदूर अपने घर पहुचने के लिए पैदल ही महानगरों से चल दिये। इन मजदूरों के पास ना तो रास्ते में खाने के लिए भोजन था ना ही पीने को पानी। लॉकडाउन के कारण इन्हें रास्ते में कोई दुकान खुली नहीं मिली जिससे वह चीजो को खरीद सके, कई मजदूरों के पास इतना पैसा ही नहीं था कि वह दुकान से खाने के लिए कुछ भी खरीद पाये, ऐसे में राजमार्गो पर अगर किसी ने खाना एवं पानी दे दिया तो ले लेते नही तो भूखे पेट ही अपनी मंजिल की ओर बढते जाते। जब यह कई दिनों तक हजारों किलोमीटर का सफर तय कर झांसी शहर पहुचे तो संस्थान के द्वारा महानगरों की ओर से आ रहे मजदूरों की मदद के लिए भोजन, चाय, नाश्ता परमार्थ रसोई के माध्यम से उपलब्ध कराया जाता था। साथ ही शहर की श्रमिक बस्तियों के जरूरतमंद परिवारों को प्रशासन के साथ सहयोग कर भोजन उपलब्ध कराया गया। जिसके लिए परमार्थ रसोई का संचालन किया गया।

लॉकडाउन के दौरान सुप्रीम कोर्ट के द्वारा जनहित याचिका के आदेश पर केन्द्र सरकार के द्वारा मजदूरों, छात्रों को अपने घर जाने की छूट देने पर यह मजदूर अपने घर की ओर निकले। बुन्देलखण्ड का झांसी शहर जो आवागमन की दृष्टि से प्रमुख स्थान माना जाता है जो सडक एवं रेल मार्ग से देश के सभी महानगरों से जुडा हुआ है। झांसी उत्तर और दक्षिण को जोडने वाले मार्गो पर स्थित एक प्रमुख स्थान है। यहां से राष्ट्रीय राजमार्ग–27 देश के प्रमुख महानगरों को जोडता है। इसी राष्ट्रीय राजमार्ग पर हर रोज हजारों की तादात में कई सौ किलोमीटर की यात्रा कर मजदूर झांसी पहुच रहे थे। जिसमें प्रमुख रूप से ऐसे मजदूर आ रहे थे जो बहुत ही लम्बी दूरी तय कर अपने घर को जा रहे थे। ऐसे ही मजदूरों को भोजन उपलब्ध करने के लिए झांसी से निकले राष्ट्रीय राजमार्ग 27 पर परमार्थ समाज सेवी संस्थान के द्वारा कम्यूनिटी किचन का संचालन किया गया, जिसमें हर दिन लगभग 400 मजदूर भोजन करते थे। जो देश के अलग–अलग महानगरों से कई दिनों की पैदल यात्रा कर यहां से गुजर रहे थे। इन मजदूरों को संस्थान के द्वारा चाय, नाश्ता, भोजन की उपलब्ध कराया गया थे। यह मजदूर ज्यादातर महाराष्ट्र, तेलंगाना, हरियाणा, कर्नाटक, मध्य प्रदेश से आ रहे थे एवं बुन्देलखण्ड के जिलों सहित, लखनऊ, गोरखपुर, फतेहपुर, कानपुर व बिहार, असम, पश्चिम बंगाल, आदि जगह जा रहे थे।

श्रमिक बस्तियों में परमार्थ संस्था द्वारा किया गया सेवा कार्य

झांसी शहर में परमार्थ संस्था के द्वारा श्रमिक बस्तियों में कम्यूनिटी किचन के माध्यम से लोगों को भोजन उपलब्ध कराया गया। इन क्षेत्रों में ज्यादा. तर ऐसे लोग निवास कर रहे थे, जो शहर में बेलदारी मजदूरी, लोटपीटा, कचरा बीनने वाले थे। लॉकडाउन के बाद इनके काम पूर्ण रूप से बंद हो गये थे एवं आर्थिक स्थिति भी इतनी अच्छी नहीं थी कि वह इतने दिनों तक अपने भोजन की व्यवस्था कर पाये। संस्थान के द्वारा इन मलिन बस्तियों में लॉकडान के दूसरे दिन से ही भोजन उपलब्ध कराया। भोजन वितरण की आवश्यकताओं को देखते हुए जिला प्रशासन द्वारा कम्यूनिटी किचन का आयोजन किया गया जिसमें सामाजिक संस्थाओं को भी अपना सहयोग देने के लिए कहा गया। संस्थान द्वारा जिला प्रशासन के साथ समन्वय कर शहर की एक दर्जन से अधिक बस्तियों में हर रोज दोनो समय का भोजन का वितरण किया गया। इस दौरान झांसी शहर में जोहर नगर, ग्राम पलींदा, चित्रा चौराहा, आरटीओ ऑफिस, सखीपुरा, ग्वालटोली, हंसारी, सूती मिल बस्तियों में लगभग 1 माह तक लोगों को भोजन मुहैया कराया गया।

समुदाय में कोरोना के प्रति जागरूकता बढाने हेतु यात्रा

भारत सहित पूरा विश्व कोरोना संक्रमण से प्रभावित है। देश में लगातार संक्रमण के मामले बढते जा रहे है। कोरोना संक्रमण के बढते प्रभाव को कम करने के लिए लगातार तीन देशव्यापी लॉकडाउन होने के कारण महानगरों से लाखों की संख्या में प्रवासी मजदूरों ने अपने घर की ओर पलायन किया है। जिससे गांव में कोरोना संक्रमण का खतरा बढ गया है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में शहर से वापस आये कई प्रवासीय मजदूर कोरोना संक्रमित पाये जा रहे है, जिससे ग्रामीण क्षेत्र में इस संक्रमण के बढने का खतरा बना हुआ है। जागरूकता के अभाव में ग्रामीण क्षेत्रों में कोरोना वायरस को एक शहरी बीमारी के रूप में देखा जा रहा है। ज्यादातर लोग इससे बचाव के तरीकों पर ज्यादा ध्यान नहीं दे रहे है एवं अनेक प्रकार की अफवाहों से भ्रमित हो रहे है। इलाकें में साक्षरता अधिक ना होने से लोगों के पास कोरोना से लक्षण, बचाव एवं इसको रोकने के उपायों की उपयोगी जानकारी का अभाव है, जिससे उनके मन में तमाम प्रकार की शंकाऐं उत्पन्न हो रही है। शहरों के बाद ग्रामीण क्षेत्र में कोरोना संक्रमण का खतरा बढता जा रहा है। स्वास्थ्य मंत्रालय के आंकडों के अनुसार मई माह तक कोरोना महामारी के 21 प्रतिशत केस ग्रामीण क्षेत्र में थे जो लगातार बढ रहे है। बुन्देलखण्ड जैसे पलायनग्रस्त क्षेत्र में जहां लाखों की संख्या में प्रवासीय मजदूर लौटकर अपने घर आये है, ऐसे क्षेत्र कोरोना महामारी के प्रति लोगों को जागरूक करना बहुत आवश्यक है, जिससे वह कोरोना महामारी के लक्षण, बचाव के तरीकों को जान पाये।

परमार्थ समाज सेवी संस्थान द्वारा कोरोना महामारी के बारे में लोगों को जागरूक करने के लिए कोरोना जागरूकता यात्रा का आयोजन किया गया। यह यात्रा उत्तर प्रदेश के झांसी, ललितपुर, मध्य प्रदेश के टीकमगढ छतरपुर, रा. जस्थान के अलवर, करौली जिलों के 250 गांवों में आयोजित की गयी। जिसके द्वारा गांवों में लोगों को घर–घर जाकर पम्पलेट, मास्क आदि वितरित किये गये। साथ ही गांव में कोरोना के प्रति लोगों को संवेदित करने के लिए दीवार लेखन का कार्य भी किया गया।

प्रक्रिया

संस्थान के द्वारा जून माह के दौरान उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान के 6 जिलो में कोरोना जागरूकता यात्रा का आयोजन किया गया। यात्रा के दौरान लोगों को जागरूक करने के लिए विभिन्न प्रकार के संसाधनों का उपयोग किया गया जिसमें मुख्य रूप से क्षेत्रीय भाषा में माइक के द्वारा कोरोना के लक्षण, उपाय, रोकथान के बारे में बताना, पम्पलेट, दीवार लेखन, मास्क वितरण आदि के माध्यम से लोगों को घर–घर जाकर जानकारी देना। प्रत्येक जिले में जागरूकता रथ यात्रा का शुभारम्भ जिलास्तर के अधिकारियों के द्वारा किया गया जिसमें, परमार्थ के द्वारा कोरोना संक्रमण के रोकथाम हेतु किये जा रहे प्रयासों की प्रंशसा की गयी। छतरपुर जिले में अपर जिलाधिकारी ने रथ को हरी झण्डी दिखाते हुए कहा कि कोरोना काल में सामाजिक संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका है, जिसे पूरे देश में देखा जा रहा है। इस यात्रा के दौरान की गयी गतिविधियों का विवरण निम्न है:–

कोरोना जागरूकता रथ :-

ग्रामीण क्षेत्र में लोगों को गांव–गांव जागरूक करने के लिए प्रत्येक जिले में एक जागरूकता रथ तैयार किया गया, इस जागरूकता रथ में कोरोना महामारी के बचने के उपायों एवं लोगों को संवेदित करने हेतु बैनर, स्टैण्डी आदि का प्रयोग किया। इस जागरूकता रथ को गांवों में घुमाया गया जिससे लोग इसके माध्यम से अधिक से अधिक जागरूक हो सके। ग्रामीण क्षेत्र में साक्षरता अधिक ना होने के कारण ज्यादातर लोग मौखिक या ध्वनि यंत्रों से किसी भी प्रकार की जानकारी प्रदान करने में सुविधा होती है जिससे वह जानकारियों को सही ढंग से समझ भी पाते है, इसके लिए रथ में ध्वनिवादक यंत्रों से क्षेत्रीय भाषा में कोरोना महामारी के बारे में बताया गया जिससे लोगों को अधिक दूरी तक भी कोरोना के बारे में जागरूकता प्राप्त हुयी। इस जागरूकता रथ के माध्यम से उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान के 6 जिलों के 250 गांवों में जागरूकता की गयी।

मास्क वितरण :- कोरोना जागरूकता यात्रा के दौरान गांव में भ्रमण कर कोरोना महामारी से सम्बन्धी जानकारी देने के साथ लोगों को सोशल डिस्टें. सिंग के बारे में बताया गया कि जब भी एक दूसरे से बात करे कम से कम 1 मीटर की दूरी बनाकर रखे, खांसी जुखाम होने पर किसी भी व्यक्ति के सम्पर्क में ना आये एवं स्वास्थ्य विभाग को जानकारी दे। इस क्षेत्र में जाग. रूकता की कमी एवं आर्थिक स्थिति खराब होने के कारण ज्यादातर लोगों के द्वारा मास्क का उपयोग नहीं किया जा रहा है, जिससे संक्रमण फैलने की सम्भावना अधिक है। लोगों को इसके बारे में जागरूक करते हुए यात्रा की टीम के द्वारा लोगों को मास्क वितरण किया गया एवं इसकी उपयोगिता के बारे में समझाया गया। टीम के द्वारा लोगों को बताया कि केन्द्र एवं राज्य सरकार के द्वारा कोरोना से बचाव हेतु विभिन्न प्रकार की गाइडलाइन जारी की गयी है, जिसमें मास्क लगाना अनिवार्य है। विभिन्न शोधों के द्वारा भी पता चल रहा है कि कोरोना वायरस हवा में भी रह सकता है, इसीलिए जब भी घर से बाहर जाये या किसी से बात कर रहे हो तो 1 मीटर की दूरी बनाकर रखे एवं मास्क लगाये।

शहर से गांव लौटे लोगों का डाटा संकलन - बुन्देलखण्ड क्षेत्र से आजीविका के अभाव में गांव के ज्यादातर लोग महानग. रों में जाकर अपनी आजीविका चलाते थे, लेकिन कोरोना महामारी के कारण हुये लॉकडाउन से शहरों में आजीविका के संसाधन खत्म होने से सभी प्रवासीय मजदूरो को अपने गांव वापिस लोटना पडा। लगातार लॉकडाउन के कारण अब इनकी आर्थिक स्थिति भी खराब हो गयी है। इसीलिए संस्था के द्व ारा जागरूकता यात्रा के दौरान शहर से वापिस आये प्रवासीय मजदूरों को डाटा का संकलन किया गया है, जिसके माध्यम से इन मजदूरों को गांव में ही तत्काल रूप से रोजगार उपलब्ध कराया जा सके। प्रशासन के साथ दीर्घकालिक योजना बनाकर आजीविका के स्त्रोत का विकास किया जा सके जिससे लोगों को गांव में ही रोजगार उपलब्ध हो सके। यात्रा के दौरान निकलकर आया कि उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के 129 गांवों में 8315 प्रवासीय मजदूर कोरोना महामारी के कारण लागू हुए देशव्यापी लॉकडाउन के दौरान वापिस आये। गांव वापिस आये ज्यादातर मजदूर हरियाणा, दिल्ली, गुजरात में घर बनाने या फिर किसी फैक्ट्री में काम करते थे, जिससे उन्हें औसतन 8500 रूपये महिने में मिल जाते थे।

रोजगार देने के लिए किये जा रहे कार्यो का संकलन

- कोरोना महामारी के बाद महानगरों से लाखों की संख्या में बुन्देलखण्ड के प्रवासीय मजदूर अपने गांव वापिस लौटे है, ऐसे में गांव में आजीविका को सुनिश्चित करने के लिए सरकार के द्वारा गांव में विभिन्न विभागो के द्वारा रोजगार उपलब्ध कराया गया है जिसमें मुख्तय मनरेगा रहा। मनरेगा के माध्यम से इन प्रवासीय मजदूरों को शहर से लोटने के बाद अपने गांव में काम मिला, इन कार्यो में मुख्य रूप से जल संरक्षण के कार्यो को सरकार के द्वारा बढावा दिया गया। इस दौरान ज्यादातर गांव में बंधीकरण, समतली. करण, तलैया निर्माण, कच्चे अवरोध बांध बनाये गये। संस्था के दौरान गांव के रोजगार कार्यो के संकलन में पाया गया कि उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के 119 गांवों में मनरेगा के द्वारा कार्य किया जा रहा है जिसमें 10923 गांव के लोगों को रोजगार उपलब्ध कराया गया है। इस दौरान लोगों के द्वारा बताया गया कि जब से वह गांव में आये है उनको 30 से 50 दिन का रोजगार अभी मिल चुका है, कुछ कार्यो का भुगतान कर दिया गया कुछ कार्यो का अभी भुगतान प्राप्त नहीं हुआ है। यात्रा के दौरान शहर से लोटे प्रवासीय मजदूरों के द्वारा बताया गया कि लॉकडाउन के बाद गांव में आने पर कोई भी आय का जरिया ना होने के कारण उन्हें आर्थिक तंगी से गुजरना पडा बाद में मनरेगा के माध्मय से काम मिलने से उनकी फिलहाल रोजी रोटी चल रही है।

पेयजल स्थिति :- कोरोना महामारी के संक्रमण को रोकने के लिए सबसे आवश्यक है कि लोग शोसल डिस्टेंसिंग बनाये रखे, जिससे दूसरे लोग इससे संक्रमित ना हो। ऐसे में ग्रामीण क्षेत्र में सबसे ज्यादा संक्रमण का खतरा हैण्डपम्प या कुओं पर होता है जहां से गांव की ज्यादातर आबादी अपनी दैनिक जरूरतों के लिए पानी की उपलब्धता सुनिश्चित करती है। लेकिन अभी भी कई गांव ऐसे है, जहां पर बहुत कम हैण्डपम्प लगाये गये है। संस्थान के द्वारा ऐसे गांवों का चिन्हांकन किया गया एवं सम्बधित विभाग के साथ समन्वय कर तत्काल रूप से पेयजल हेतु व्यवस्था करने का प्रयास किया जा रहा है। जिससे कोरोना जैसी संक्रामक बीमारी को फैलने से रोका जा सके।

यात्रा के दौरान उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के गांव के 1600 हैण्डपम्प सही है एवं 410 हैण्डपम्प खराब पडे हुये है।

आपदा के समय बुन्देलखण्ड जल मंच ने किया राशन सामग्री वितरण

पूरे भारत में राज, समाज ने एक साथ मिलकर इस महामारी से निपटने का कार्य किया, जो आज भी निरन्तर जारी है। जल जन जोडो अभियान के द्वारा बुन्देलखण्ड में उत्पन्न हुये हालातों को देखते हुए बुन्देलखण्ड जल मंच से जुडे सामाजिक संगठनों की बैठक का आयोजन किया गया। जिसमें बुन्देलखण्ड जल मंच से जुडे 23 सामाजिक संगठनों के द्वारा सहभागिता की गई। इस बैठक में बुन्देलखण्ड में आए प्रवासीय मजदूरों के रोजगार एवं आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों को सामूहिक स्तर एवं सरकार से समन्वय कर सहायता प्रदान करा सकते है, इसके बारे में चर्चा की गई। चर्चा के दौरान सभी बुन्देलखण्ड जल मंच के सदस्यों के द्वारा बताया गया कि पूरे बुन्देलखण्ड में प्रवासीय मजदूरों को मनरेगा एवं अन्य सरकारी योजनाओं से कार्य दिलाने के लिए लगातार प्रयास किया जा रहा है साथ ही सरकार के द्वारा घोषित की गयी योजनाओं से भी लोगों को जोडा जा रहा है, लेकिन कई परिवार ऐसे है, जिनके पास एक दिन के भी खाद्यान्न की उपलब्धता नहीं है। ऐसे परिवारों को हमें तत्काल रूप से मदद करने की आवश्यकता है।

बैठक में निर्णय लिया गया कि बुन्देलखण्ड जल मंच के द्वारा सभी जिलों में शहरों से आ रहे प्रवासीय मजदूरों एवं अत्यधिक खराब आर्थिक स्थिति वाले परिवारों को खाद्यान्न किट का वितरण किया जायेगा एवं उन्हें जल्द से जल्द मनरेगा एवं सरकारी योजनाओं से जोडा जायेगा। इस कार्य के लिए 6 सहयोगी संस्थाओं का चयन सभी सदस्यों के द्वारा किया गया। इन सामाजिक संस्थाओं में झांसी की कलाम एजूकेशन एवं वेलफेयर सोसायटी, झांसी, विद्याधान समिति बांदा, नाज समाज सेवी संस्थ. ान दतिया, बहुजन हितकारी शिक्षा प्रसार समिति निवाडी, छतरपुर महिला जाग्रती मंच छतरपुर, बुन्देलखण्ड ग्रामीण विकास संस्थान खजुराहो ने अपने–अपने क्षेत्र में परिवारों को चिन्हांकन कर राशन सामग्री का वितरण किया गया। इन सहयोगी संस्थाओं के द्वारा शहरों एवं ग्रामीण क्षेत्र में सर्वेक्षण कर सूची तैयार की गयी एवं 360 परिवारों को राशन किट प्रदान की गयी। जिससे लगभग 2000 लोगों को खाने की उपलब्ध ाता हुयी। इस दौरान बुन्देलखण्ड जल मंच के सदस्यों के द्वारा बताया गया कि उनके क्षेत्र में ऐसे कई परिवार थे जो सालों से शहर में रह रहे थे, अचानक कोरोना महामारी के कारण उन्हें अपने गांव आना पडा, ना उनके पास रहने के लिए जगह थी ना खाने के लिए खाद्यान्न सामग्री थी, ऐसे परिवारों को विशेष तौर से मदद करने का प्रयास किया।

बुन्देलखण्ड में प्रवासीय मजदूरों को भा रहा है बकरी पालन

कोरोना के कारण हुए सम्पूर्ण लॉकडाउन के बाद बडे पैमाने पर मजदूर शहर से गांव की तरफ वापिस लौटे है, अब इन मजदूरों के सामने अपने भविष्य की चिंताऐं है, गांव में इन दिनों मजदूर भविष्य में अपनी आजीविका चलाने को लेकर चिंतित है, गांव में वह तमाम तरह के जतन करकर रोजगार की सम्भावनाओं को तलाश रहे है, क्योंकि कोरोना काल के बाद वह गांव से शहर नहीं जाना चाहते है। वह गांव में ही रहकर अपने आजीविका के संसाधनों का विकास करना चाहते है। ऐसे में ललितपुर जिले के आदिवासी समुदाय बाहुल्य क्षेत्र तालबेहट में यह प्रवासीय मजदूर पशु पालन से अपनी आजीविका सुनिश्चित करने के लिए सबसे उपयुक्त समझ रहे है, पशु पालन में सबसे ज्यादा ध्यान बकरी पालन पर किया जा रहा है, क्योंकि बकरी पालन बुन्देलखण्ड के भौगोलिक परिस्थिति के हिसाब से सबसे उपयुक्त आजीविका सम्बर्धन संसाधन है। इस क्षेत्र का एक बडा हिस्सा पठारी है जहां कृषि नहीं हो सकती है, ऐसे क्षेत्र में पशुओं के लिए उपयुक्त चारागाह उपलब्ध होते है, जिससे पशुओं के खाद्यान्न पर भी ज्यादा पैसा खर्च नहीं करना पडता है।

ऐसे प्रवासीय मजदूरों को स्थानीय संस्था परमार्थ द्वारा प्रति परिवार तीन बकरियां उपलब्ध करायी जा रही है, इन तीन बकरियों के साल भर पालने से लगभग तीस हजार रूपये के फायदे होने की सम्भावना होती है। जिससे प्रवासीय मजदूरों को खेती से भी बडा आजीविका चलाने का स्त्रोत बकरी पालन होता है। अब जो शहर से प्रवासीय मजदूर आये है, उनको संस्थान के द्वारा इस सन्दर्भ में प्रशिक्षण भी लिया जा रहा है और बकरी पालन के कार्य को करने के लिए संस्थान के साथ सम्पर्क करकर इस आजीविका के काम से अपने को लाभान्वित करना चाहते है। अभी तक परमार्थ के द्वारा 200 परिवारों को बकरी पालन से जोडा गया है एवं योजना है कि इसको बुन्देलखण्ड के अन्य क्षेत्रों में विस्तार कर लोगों की आजीविका का सुनिश्चित किया जा सके।

इस सन्दर्भ में परमार्थ में बकरी पालन योजना की प्रभारी प्राची कलोरिया बताती है कि बुन्देलखण्ड क्षेत्र में बकरी पालन एक लाभकारी व्यवसाय है, अगर एक किसान तीन बकरियों को 14 महिने तक रखता है तो वह उन बकरियों के माध्यम से 30 से 35 हजार रूपये कमा लेता है। परमार्थ संस्था के कार्यक्रम संयोजक सिद्धगोपाल का कहना है कि वर्तमान समय में बकरी पालन ही एक ऐसा व्यवसाय है, जो प्रवासीय मजदूरो को तत्कालिक स्तर पर सहायता कर सकता है, जो कम लागत में अधिक मुनाफे की तरफ आष्वस्थ कर सकता है। उनका कहना है कि बकरी पालन को वैज्ञानिक ढंग से करने की आवश्यकता है, इसके लिए गांव स्तर पर पशु सखी बनाई जाये साथ ही उन्होंने सरकार से मांग की है कि सरकार जो पैसा दे रही है, उस पैसे से अगर प्रवसीय मजदूरों को बकरी उपलब्ध करायी जाये, तो निश्चित तौर से इन परिवारों को लाभ होगा।

कोरोना काल में परमार्थ हमारे लिए फरिश्ता बनकर आयी

34 साल कि श्रीमति रुपा बाई जोहर नगर स्थित मोहल्ले में अपने पति के साथ लोहा पीटने काम करती है। उनके परिवार में कुल चार सदस्य है। वह कहती है कोरोना उनके जीनव में काल बनकर आया है। इस लॉकडाउन के दौरान वह अपने आप को बेसहा. रा महसूस करने लगी थी। क्योकि उनका काम कई महिनो से बंद पड़ा था। परिवार में छोटो छोटे बच्चे थे, गुजर–बसर करना अत्यन्त मुश्किल था। बाजार बंद होने से जो सामान बेचने के लिए बनाया था वह भी नही बिक रहा था। जिसके कारण भूखे पेट रहना पड़ता था। जो भी सहारा मिल रहा था वह अपर्याप्त था। जिसके कारण वह अवसाद में आ गयी थी। तभी उनके पास परमार्थ संस्था के कार्यकर्ता पहुचे जिन्होंने उनके परिवार को खाद्य सामग्री 50 आटा, 15 दाल, 10 चावल, तेल, मिर्च मसाले जरूरत की सामग्री की मदद की।

वह कहती है परमार्थ कि तरफ से जो सहायता कोरोना काल के दौरान मिली है वह उनके और उनके बच्चों के लिए एक संजीवनी साबित हुयी है। लॉकडाउन के दौरान कभी कभी उन्हें सहायता शि. विर से पूडी सब्जी लोग दे जाते थे। लेकिन उनसे उनका गुजारा हो पाना काफी हद तक मुश्किल था। मगर परमार्थ के सहायता से हमारे घर का चूल्हा जला, आज हमारे बच्चें भुखे पेट नहीं सो रहे है।

भविष्य में लॉकडाउन का असर ऐसे ही रहा तो हम सब के सामने जिंदगी चलाना अत्यधिक कठिन होगा। जब भरपेट भोजन नहीं मिलेगा तो कोरोना जैसी महामारी से कैसे लड पायेगे।

वह कहती है कि कोरोना से बचने के लिए मैं और मेरें बच्चें साबून का इस्तेमाल कर लेते है, लेकिन पैसे नहीं होने के कारण साबुन खरी. दना बहुत ही मुश्किल होता है। यहां तक कि कपड़े धोने के लिए भी साबुन नहीं होता है। परमार्थ के टीम ने हमारे मोहल्ले में आकर कई बार साबुन और मास्क वितरण करके हमारे मोहल्ले में जागरुकता फैलाने का काम किया।

विपत्तीयों से उबारता परमार्थ

सखीपुरा की निवासी 67 साल कि मानकुंवर जो वृद्ध महिला है वह अपने परिवार की मुखिया है, वह लॉक. डाउन में अपने परिवार के ऊपर आयी विपत्तीयों के बारे में बताती है कि उनके परिवार में कुल 8 सदस्य है, जो हर रोज मजदूरी कर अपनी रोजी रोटी चलाते थे। लेकिन कोरोना के बढ़ते संकट से परिवार पर जीवन में काफी प्रवाह पड़ा है, क्योकि उनके पास ना तो संसाधन था और न ही काम। मानकुवर आगे कहती है कि कोरोना के कारण हमारा परिवार कैसे भी करके दिन गुजार रहा था। बच्चें भी एक समय खाते थे नहीं तो एक समय भुखे पेट ही सोना पड़ता था। ऐसे में परमार्थ समाज सेवी संस्थान ने हमारे घर आकर हमे 20 दिन की खाद्य सामग्री उपलब्ध करायी।

वह आगे कहती कि परमार्थ कि तरफ से जो राशन मिला था, वो भगवान का देन था, जो संकट के वक्त में आकर हमारे परिवार को भूखों मरने से बचा लिया।

मानकुवर कहती है कि हमारे परिवार को कोरोना से बचने का सही तरीका पता नहीं था, लेकिन परमार्थ कि तरफ से जो को. रोना महामारी जागरुकता फैलाई गई उससे हमारा परिवार कोरोना के प्रति जागरुक हुआ और परमार्थ कि तरफ से हम सब को साबुन, मास्क और सेनीटाइजर वितरण किया गया। इससे कोरोना को लेकर हम सब सर्तक हो पायें।

श्रमदान शिविर का आयोजन कर महिलाओं ने दिखाया जल संरचनाओं से जुडाव

मध्य प्रदेश के जनपद छतरपुर के विकासखंड बड़ामलेहरा अंतर्गत ग्राम पंचायत सेवार की मीरा देवी अपने गाँव में गठित पानी पंचायत में सक्रिय भूमिका का निर्वाहन जल सहेली के रूप में करती आ रही हैं, गाँव में पेयजल समस्या हो अथवा शासकीय योजनाओं के लाभ को लेकर सदैव वंचित परिवारों की लड़ाई को लेकर अगुवाई करती आ रही हैं।

इस वर्ष मार्च माह में कोरोना के कारण उत्पन्न परिस्थितियों में गाँव के बहुतायत ऐसे लोग जो अपने परिवार की आ. जीविका बाहर शहरों की मजदूरी पर निर्भर थे। घर लौटने को विवश हो गये ऐसे में ज्यादातर वो परिवार थे जो बिना कार्य का पैसा लिए ही जो साधन संसाधन मिला अथवा पैदल ही अपने गाँव आये, उन दिनों बीमारी की भयावहता से जैसे जैसे लोग आते गये गाँव के बाहर ही क्वारंटाइन करा दिया जिसके कारण लोग चैत्र का कार्य भी नहीं कर पाए। परमार्थ समाज सेवी संस्थान द्वारा कोरोना के दौरान अचानक आर्थिक तंगी से जूझ रहे 40 परिवार खासकर प्रवासियों को ऐसे वक्त जब उनको इस आपदा के समय अचानक घर वापिस आना तब गांव में श्रमदान शिविर का आयेाजन किया गया, इसके लिए लोगों के साथ संवाद स्थापित कर कार्ययोजना का निर्माण किया और पानी पंचायत, जलसहेली के मार्गदर्शन में गाँव के क्षतिग्रस्त जल संरचनाओं तालाबों, चैकडेम को ठीक करने का कार्य किया। इसके पश्चात त्वरित की गयी सहायता से स्वाभिमान राहत किट प्रदान कर लोगों को तात्कालिक संकट से निजात दिलाने के लिए प्रदत्त सामग्री आटा चावल दाल तेल साबुन 15–20 दिन का राहत मिला जिसके कारण न केवल लोगों को काम मिला बल्कि सालों से टूटी पड़ी तलैया का टूटा बाँध बनाकर क्षेत्र के बेकार बह जाने वाले पानी का संग्रहण किया। जिससे क्षेत्र में कम वर्षा होने के बावजूद भी यह तलैया भर भी गयी और इसके भर जाने से आसपास के दर्जनों कुआँ के जलस्तर में सुधार हो गया । इस बीच परमार्थ कार्यकर्ताओं द्वारा शासन के अधिकारियों से मिलकर जन वितरण प्रणाली मनरेगा में लोगों को कार्य दिलाने का कार्य किया। गांव में रोजगार की लगातार बढ़ रही समस्या को देखते हुए लोगों को काम दिलाने का प्रयास किया। संस्थान के द्वारा लगातार प्रयास किया जा रहा है कि इस गांव के लोगों को अन्य योजनाओं से जोडा जाऐ एवं उनके दीर्घकालिक उत्थान के लिए गांव के जल संकट को खत्म किया जाये, जिससे वह अपनी खेती को छोडकर शहरों में काम करने की लिए विवश ना हो।

परमार्थ समाज सेवी संसथान
686, शिवजी नगर, भारत पेट्रोल पंप के पीछे
झाँसी - 284001, (यु.पी.)